पुरस्कार व्याख्यान

9 दिसंबर 1993 को अल्फ्रेड नोबेल की याद में दिया गया व्याख्यान

समय के जरिये आर्थिक प्रदर्शन

अर्थव्यवस्थाओं को समय के जरिये प्रदर्शित करना ही आर्थिक इतिहास है। इस क्षेत्र में अध्ययन का उद्देश्य न केवल आर्थिक इतिहास पर नया प्रकाश डालना है बल्कि एक विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से एक आर्थिक सिद्धांत पेश करना है जिससे कि हम आर्थिक परिवर्तन को समझने में सक्षम हो सकें। यथार्थ में सामान्य संतुलन के सिद्धांत के तुल्य एक आर्थिक गतिविज्ञान का सिद्धांत विश्लेषण के लिए एक आर्दश तरीका होगा। इस तरह के सिद्धांत की अनुपस्थिति में हम पूर्व की अर्थव्यवस्थाओं के चरित्रों की व्याख्या, विभिन्न समय काल में अर्थव्यवस्थाओं के प्रदर्शन का परीक्षण और तुलनात्मक सांख्यिकी विश्लेषण कर सकते हैं लेकिन किस तरह से समय के साथ अर्थव्यवस्था विकसित हुई इसकी विश्लेषणात्मक समझ नदारद है।

आर्थिक विकास के क्षेत्र में आर्थिक गतिविज्ञान का सिद्धांत भी काफी महत्वपूर्ण है। यह कोई रहस्य नहीं है कि दूसरे विश्व युद्ध के खत्म होने के बाद पांच दशकों के दौरान खुद विकास का क्षेत्र क्यों विकसित होने में विफल रहा। नियो क्लासिकल सिद्धांत उन सिद्धांतों का विश्लेषण और उन्हें उचित ठहराने के लिए अनुपयुक्त है जो विकास को प्रेरित करते हैं। यह बाजार के कामकाज से संबंधित सिद्धांत है न कि बाजार कैसे विकसित होता है। ऐसे में जब कोई यह नहीं समझेगा कि अर्थव्यवस्था कैसे विकास करती है तो वह कैसे किसी सिद्धांतों की सिफारिश कर सकता है। नव शास्त्रीय (नियो-क्लासिकल) अर्थशास्त्रियों द्वारा लागू किए गए अधिकतर सिद्धांतों ने विषय वस्तु को निर्देशित किया है और इस तरह के विकास में बाधाएं खड़ी की हैं। नए रूप में वह सिद्धांत, जो गणितीय परिशुद्धता और भव्यता प्रदान करता है, एक गैरप्रतिरोधी और स्थिर दुनिया का निर्माण किया। जब इसका इस्तेमाल आर्थिक इतिहास और विकास में किया गया तो इसने तकनीकी विकास और हाल में मानव पूंजी निवेश पर ध्यान केंद्रित किया, लेकिन इसने संस्थाओं में मूर्त रूप ले चुके प्रोत्साहित ढांचे की अनदेखी की जिसने इन कारकों में सामाजिक निवेश की सीमा को निश्चित किया। समय काल के साथ आर्थिक प्रदर्शन के विश्लेषण में दो लागत परिकल्पनाएं शामिल हैं: पहला यह कि संस्थाएं कोई मायने नहीं रखती और दूसरा कि समय कोई मायने नहीं रखता।

यह लेख संस्थाओं और समय के बारे में है। यह सामान्य संतुलन के सिद्धांत की तुलना में आर्थिक गतिविज्ञान के सिद्धांत को मुहैया नहीं करवाता। हमारे पास ऐसा कोई सिद्धांत नहीं है। न तो यह अर्थव्यवस्थाओं के ऐतिहासिक विकास के बारे में हमारी समझ को बढ़ाने के लिए एक शुरुआती विश्लेषणात्मक ढांचा है और न ही यह अर्थव्यवस्थाओं के आर्थिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने की नीतियों के बारे में जरूरी मार्गदर्शन। विश्लेषणात्मक ढांचा नवशास्त्रीय (नियो क्लासिकल) सिद्धांत का परिष्कृत स्वरूप है। यह अभाव की मूलभूत धारणा और इसके बाद प्रतियोगिता और लघु-आर्थिक सिद्धांतों के विश्लेषणात्मक पद्धतियों को धारण किए हुए है। यह सिद्धांत जो कुछ भी बदलता है वह तार्किक धारणा होती है और जो कुछ भी जोड़ता है वह समय का आयाम होता है।

संस्थाएं समाज को प्रोत्साहित करने वाला ढांचा तैयार करती हैं और इसके परिणाम स्वरूप राजनीतिक व आर्थिक संस्थाएं आर्थिक प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण निर्धारक कारक हैं। समय, जो आर्थिक और सामाजिक परिर्वतन को जोड़ता है, वह एक आयाम है जिसमें इंसान के सीखने की प्रक्रिया संस्थाओं के उभरने के मार्ग को प्रशस्त करता है। यह एक विश्वास है, जो व्यक्ति, समूह और समाज में होता है, जो समय के साथ सीखने के परिणाम स्वरूप विकल्पों को निर्धारित करता है। ज्ञान न केवल एक व्यक्ति के जीवनकाल या समाज की एक पीढ़ी से हासिल होता है बल्कि व्यक्ति, समूह और समाज को जो कुछ भी हासिल होता है वह समय के साथ समेकित होता है और संस्कृति व समाज के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता है।

इस लेख के अगले दो भाग में पहला, कार्य का सार निकाला गया है, दूसरा, संस्थाओं की प्रकृति और किस तरह से वह आर्थिक प्रदर्शन को प्रभावित करती हैं, यह देखा गया है, तीसरा, इसके बाद सांस्थानिक परिवर्तन की प्रकृति की विशिष्टता को रेखांकित किया गया है। चौथा, बाकी के चार खंडों में मानव के सीखने की प्रक्रिया के बारे में ज्ञान संबंधी विज्ञान की पहुंच की व्याख्या की गई है, पांचवां, आर्थिक इतिहास को समझने के लिए एक संस्थागत पद्धति मुहैया करवाई गई है, छठा अतीत के बारे में हमारी समझ को बेहतर बनाने के लिए प्रयोग किए गए सिद्धांतों के परिणामों की ओर संकेत करता है और अंततः सातवां वर्तमान विकास की नीतियों के लिए निहितार्थ का सुझाव देता है।

2

संस्थाएं मानव द्वारा ईजाद किया गया बंधन हैं जो मानव व्यवहार को संरचनाबद्ध करती हैं। ये औपचारिक बंधनों (नियम, कानून, संविधान) अनौपचारिक बंधनों (आदतों, समझौतों

और व्यवहारों और इनको लागू करने के गुणों) से बने होते हैं। एक साथ इन्हें समाज के प्रोत्साहित संरचना के रूप में परिभाषित किया जाता है विशेष तौर पर अर्थव्यवस्थाओं के संबंध में। लेन-देन और परिवर्तनों की कीमत को तय करने के लिए संस्थाओं और तकनीक को थोपा जाता है जो उत्पादन की लागत में जुड़ जाता है। वह रोनाल्ड कोआस (1960) थे जिन्होंने संस्थाओं, लेन-देन की लागत और नवशास्त्रीय (नियो-क्लासिकल) सिद्धांतों के बीच महत्वपूर्ण संबंध स्थापित किए। सक्षम बाजारों का नवशास्त्रीय परिणाम केवल तभी हासिल होता है जब लेन-देन के क्रम में उसमें कोई लागत नहीं आती। केवल बिना लागत के मोलभाव की स्थिति में ही समाधान तक पहुंचा जाएगा और जो संस्थागत व्यवस्थाओं की परवाह किए बिना कुल आय को बढ़ाएगा। जब लेन-देन महंगा पड़ेगा तो संस्थाओं को दिक्कत आएगी और उनके लिए लेन-देन मुश्किल होगा। वालिस और नॉर्थ (1986) ने एक शानदार अध्ययन प्रदर्शित किया, जिसमें 1970 में अमेरिका की 45 फीसदी जीएनपी सौदा क्षेत्र को जाती थी। वास्तविक दुनिया में सक्षम बाजार तब पैदा किए जा सके जब हुंडी के कारोबार और पर्याप्त फीडबैक के कारण प्रतियोगिता मजबूत हुई ताकि कोआस के शून्य कारोबार लागत की स्थिति को करीब-करीब हासिल किया जा सके और संबंधित पक्ष यह समझ सके कि व्यापार से लाभ नवशास्त्रीय (नियो-क्लासिकल) सिद्धांत में अंतर्निहित है।

लेकिन ऐसे सक्षम बाजार को हासिल करने के लिए आवश्यक सूचनात्मक और संस्थागत जरूरतें अनिवार्य हैं। बाजार के खिलाड़ियों के पास न केवल उद्देश्य होना चाहिए बल्कि उन्हें इसे हासिल करने के लिए सही रास्ते का ज्ञान भी होना चाहिए। लेकिन खिलाड़ियों को अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए रास्ते का पता कैसे चलेगा? सहायक तर्कशीलता एक उत्तर है जिसे हालांकि खिलाड़ी शुरुआत में विविध या अशुद्ध माडल मान सकते हैं, लेकिन सूचनात्मक फीडबैक की प्रक्रिया और हुंडी के कारोबार में लगे खिलाड़ी गलत मॉडल को सुधार कर, दुष्ट व्यवहार को दंडित कर और बचे हुए खिलाड़ियों को सही रास्ते पर लाकर मॉडल को बदल देंगे।

यद्यपि, प्रतियोगी बाजार मॉडल के लिए ज्यादा कठोर अनुशासनात्मक तंत्र की जरूरत तब है जब महत्वपूर्ण लागत खर्च हो। ऐसे में बाजार में परिणात्मक संस्थाएं खड़ी होंगी जो जरूरी सूचनाएं एकत्रित करने के लिए खिलाड़ियों को उत्प्रेरित करेंगी और उन्हें अपने मॉडल को सही करने के लिए आगे बढ़ाएंगी। निहितार्थ केवल यह नहीं है कि संस्थाओं को सक्षम परिणाम हासिल करने के लिए खड़ा किया गया बल्कि आर्थिक विश्लेषण में

इनको दरकिनार किया जा सके क्योंकि आर्थिक प्रदर्शन में इन्होंने किसी स्वतंत्र भूमिका का निर्वहन नहीं किया।

ये बहुत कठोर जरूरतें थी जिनको यदा-कदा महत्व दिया गया। व्यक्ति अधूरी सूचना और वस्तुनिष्ठ तौर पर प्राप्त मॉडल के साथ काम करते हैं जो अक्सर गलत होता है। सूचनात्मक फीडबैक इन वस्तुपरक मॉडलों को सही करने में पूर्ण रूप से अक्षम हैं। यह जरूरी नहीं है कि संस्थाएं जो बनती है वह सामाजिक रूप से प्रभावी हों या फिर अक्सर प्रभावी हों। बजाय इसके इन्हें (कम से कम औपचारिक कानून) उन लोगों के लिए बनाया जाता है जो अपने हित साधने के लिए नया कानून बनवाने में मोलभाव करने में सक्षम हैं। एक शून्य लेन-देन लागत (ट्रांजेक्शन कॉस्ट) वाली दुनिया में मोलभाव की ताकत परिणामों की क्षमता को प्रभावित नहीं करती लेकिन एक सकारात्मक लेन-देन लागत वाली दुनिया में यह प्रभाव डालता है।

एक ऐसे बाजार की तलाश करना मुश्किल है जो क्षमता के लिए जरूरी स्थिति के करीब हो। ऐसे एक राजनीतिक बाजार को खोजना तो असंभव ही है। इसका कारण एकदम स्पष्ट है। लेन-देन लागत क्या विनिमय हो रहा है उसको इंगित करने वाली लागत है और वह परिणात्मक समझौते पर जोर देती है। आर्थिक बाजारों में जिन चीजों को मापा जाता है वह है वस्तुओं, सेवाओं या एजेंटों के प्रदर्शन के बहुमूल्य गुण। इसमें शारीरिक और संपत्ति के अधिकार के आयाम शामिल हैं। जल्दी-जल्दी माप करना खर्चीला काम है। ऐसे में कुछ स्तरीय कसौटी है। शारीरिक आयाम के कई वर्गीकरण हैं जैसे लंबाई, वजन, रंग आदि और संपत्ति अधिकार आयाम की कानूनी संदर्भ में व्याख्या की जाती है। प्रतियोगिता प्रवर्तन लागत को भी कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। न्यायिक व्यवस्था सताने वाली प्रवर्तन मुहैया करवाती है। अब भी वर्तमान एवं पूर्व के आर्थिक बाजार पूरी तरह से अव्यवस्थित हैं और उच्च लेन-देन खर्च से आदेशित हैं।

राजनीतिक बाजार में समझौते को लागू करना और उसका मूल्यांकन करना और भी मुश्किल है। लोकतंत्र में संविधान और जनप्रतिनिधियों के बीच जो कुछ भी आदान-प्रदान होता है वह वोट के लिए होता है। मतदाताओं को भी जानकारी हासिल करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता क्योंकि संभवतः उनके वोट की कीमत बहुत कम होती है। इसके आगे मुद्दों की जटिलता सही मायने में अनिश्चितता पैदा करती है। राजनीतिक समझौतों को प्रभावी बनाना समस्याओं से घिरना है। आर्थिक बाजारों की तुलना में प्रतियोगिता काफी कम प्रभावी होती है। कई साधारण (मूल्यांकन में आसान और जनता के लिए जरूरी) अच्छी नीतियों, जिसके बारे में संभवतः जनता अच्छी तरह जानती है, के

लिए वैचारिक रूढ़िवाद आड़े आ जाती है और अर्थव्यवस्था के परिणात्मक प्रदर्शन पर प्रभाव डालती है, जैसा कि मैं नीचे खंड 4 में चर्चा करूंगा। यह शासन प्रणाली है जो संपत्ति के अधिकार को तय करती है और उसे लागू करती है और इसके परिणाम को देखकर आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए कि आर्थिक बाजार बहुत अपवाद हैं।

3

यह संस्थाओं और संगठनों के बीच व्यवहार है जो एक अर्थव्यवस्था के सांस्थानिक उभार को एक आकार देता है। यदि संस्था किसी खेल के नियम हैं तो संगठन और इसके संचालक इस खेल के खिलाड़ी हैं।

संगठन कुछ लक्ष्यों को हासिल करने के लिए कुछ सामान्य उद्देश्यों से बंधे लोगों के समूह से बनता है। संगठन में राजनीतिक खेमों जैसे राजनीतिक दल, सांसद, पार्षद, नियामक संस्थाएं, सामाजिक संस्थाएं जैसे चर्च, क्लब, खेल-कूद संघ, शैक्षणिक संस्था जैसे स्कूल, विश्वविद्यालय, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र शामिल होते हैं।

इस तरह जो संगठन बनेंगे वे संस्थागत सांचे से मिली संभावनाओं को प्रदर्शित करेंगे। यदि संस्थागत ढांचा चोरी को प्रोत्साहित करेगा तभी व्यावहारिक संगठन पैदा होंगे और यदि संस्थागत ढांचा उत्पादक गतिविधियों को प्रोत्साहित करेगा तब उत्पादक गतिविधियों में शिरकत करने के लिए संगठन या फर्म पैदा होंगे।

आर्थिक परिवर्तन सर्वव्यापी, लगातार, बढ़ने वाली प्रक्रिया है जो संगठन के मालिक या व्यक्ति द्वारा दिन प्रतिदिन बनाए जाने वाले विकल्पों का परिणाम है। यद्यपि, इन आयामों का अधिकतर हिस्सा नया नहीं होता (नेल्सन एंड विंटर 1982) लेकिन व्यक्ति और संस्थान के बीच मौजूद समझौते में कुछ नए विचारों का प्रवेश होता है। कभी संपत्ति के मौजूदा अधिकारों और राजनीतिक नियमों में इन विचारों को निष्पादित कर दिया जाता है लेकिन कभी नई कंपनियों या फर्म को नियमों में बदलाव की जरूरत पड़ती है। इसी तरह धीरे-धीरे व्यवहारों में बदलाव आने लगेगा। दोनों ही स्थितियों में संस्थाओं में ही परिवर्तन होता है।

बदलाव होता है क्योंकि व्यक्तियों को लगता है कि वर्तमान चीजों (राजनीतिक या आर्थिक) को पुनःसंयोजित कर वे बेहतर कर सकते हैं। बदली हुई अवधारणा का स्रोत अर्थव्यवस्था के लिए पुनर्जन्य हो सकता है- उदाहरण के लिए एक अर्थव्यवस्था में एक प्रतियोगी उत्पाद की कीमत या गुणवत्ता में बदलाव (लाभ कमाने की संभावना के संदर्भ

में) मौजूदा अर्थव्यवस्था के व्यापारियों की अवधारणा को बदलेगा। लेकिन परिवर्तन का सबसे मौलिक स्रोत संस्था के व्यापारियों और व्यक्तियों से सीखना है।

यद्यपि, उत्कंठा जिज्ञासा सीखने की लालसा पैदा करेगी और संगठनों के बीच प्रतियोगिता की तीव्रता के रूप में सीखने की दर दिखेगी। प्रतियोगिता जो सर्वव्यापी कमी को प्रदर्शित करता है वह संगठनों को जीवित रहने के लिए सीखने पर जोर देता है। प्रतियोगिता की मात्रा बदल सकती है या बदलती है। एकाधिकार सबसे उच्च मात्रा है और सबसे निम्म मात्रा में सीखने के लिए प्रोत्साहन है।

आर्थिक परिवर्तन की गति सीखने की दर की एक क्रिया है लेकिन परिवर्तन की दिशा विभिन्न प्रकार की जानकारियों को हासिल करने के लिए संभावित भुगतान है। भुगतान के बारे में खिलाड़ी अवधारणा को आकार देते हैं जो मानसिक मॉडल कहलाता है।

4

मानव के सीखने की प्रकृति को सकारात्मक रूप से समझने के लिए आर्थिक सिद्धांत में रेखांकित की गई बुद्धिसम्मत अवधारणा को सामने लाना जरूरी है। सामाजिक परिवर्तन को और समझने के लिए एक ढांचा विकसित करने हेतु आगे बढ़ने के लिए इतिहास यह दिखाता है कि विचार, विचारधारा, आख्यान, फतवा और पूर्वाग्रह के मुद्दे, और खोजे गए रास्ते के बारे में समझ जरुरी है। एक तार्किक विकल्प ढांचा यह मानता है कि व्यक्ति यह जानता है कि उसके स्वयं के हित में क्या है और उसी के मुताबिक वह काम करता है। यह आधुनिक अर्थव्यवस्था के उच्च विकसित बाजार में व्यक्ति को अपना विकल्प चुनने की आजादी के संदर्भ में उचित ठहराया जा सकता है लेकिन मूल रूप से एक अनिश्चितता की स्थिति में विकल्प चुनना गलत है। वैसी स्थिति जिसने राजनीतिक व आर्थिक विकल्पों को वर्गीकृत किया है। इसने ऐतिहासिक परिवर्तन को आकार दिया है या दे रहा है।

हरबर्ट सिमॉन ने इन मुद्दों पर सुस्पष्ट तरीके से प्रकाश डाला है:

यदि... हम इस समानुपात को स्वीकार करते हैं कि निर्णयकर्ता का ज्ञान और संगणनात्मक क्षमता अलग-अलग सीमित होती है तो हमें निश्चित रूप से वास्तविक दुनिया और इसके बारे में व्यक्ति की अवधारणा के बीच अंतर और इसके पीछे के कारणों की विवेचना करनी चाहिए। कहा जा सकता है कि हमें निश्चित रूप से विस्तार की प्रक्रिया के एक सिद्धांत को जन्म देना चाहिए और इसका सिद्धांतों के आधार पर परीक्षण

करना चाहिए। हमारे सिद्धांत में निश्चित रूप से न केवल तर्क की प्रक्रिया बल्कि वह प्रक्रिया शामिल होनी चाहिए जो व्यक्तियों के वस्तुपरक प्रतिनिधित्व को उसके या उसकी परिधि में पैदा करता है। (सिमॉन, 1986 पीपी एस 210-11)

इंसान कैसे सीखता है इसको समझने के लिए हम विश्लेषणात्मक ढांचे को तैयार करते हैं। ऐसे सिद्धांत का निर्माण करने से पहले हमारे पास एक रास्ता होता है लेकिन ज्ञान संबंधी विज्ञान ने हाल के वर्षों में काफी प्रगति की है और एक संभावित काम करने के तरीके को सुझाया है जो अनिश्चितता की स्थिति में फैसला लेने में हमें सहयोग करता है।

सीखने का मतलब एक संरचना विकसित करना है जिससे कि ज्ञानेंद्रियों द्वारा प्राप्त किए गए विभिन्न संदेशों की व्याख्या की जाती है। संरचना की शुरुआती बनावट आनुवांशिक होती है लेकिन इसमें बाद में होने वाला बदलाव व्यक्ति के अनुभव का नतीजा होता है। अनुभव को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है- वह जो भौतिक वातावरण से हासिल होता है और वह जो सामाजिक-सांस्कृतिक भाषाई वातावरण से हासिल होता है। वर्गों से संरचनाओं का गठन होता है- हमारे ज्ञान को संगठित करने और मस्तिष्क के विश्लेषणात्मक परिणामों और अनुभवों को बनाए रखने के लिए वर्गीकरण धीरे-धीरे बाल अवस्था से ही आकार लेने लगता है। इन वर्गीकरणों के आधार पर हम वातावरण की व्याख्या करने के लिए मानसिक मॉडल बनाते हैं, जो पूरी तरह से कुछ लक्ष्यों को हासिल करने के लिए होता है। वर्ग और मानसिक मॉडल दोनों विकसित होकर नए अनुभवों से हासिल फीडबैक को प्रतिबिंबित करते हैं। फीडबैक कभी-कभार हमारे शुरुआती वर्गों और मॉडलों को मजबूती प्रदान करता है या उसमें बदलाव का एहसास दिलाता है- संक्षेप में कहें तो सिखाता है। इस तरह मानसिक मॉडल को दूसरों के विचारों के संपर्क में आकर नए अनुभवों के साथ लगातार पुनर्परिभाषित किया जा सकता है।

इस मोड़ पर इंसान के सीखने की प्रक्रिया विभिन्न प्राणियों से अलग होकर अलग-अलग दिशाओं में बढ़ती है विशेष तौर पर कम्प्यूटर सादृश्यता से। इसने कृत्रिम बुद्धिमता के पहले के अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मस्तिष्क अपने विशेष उद्देश्य के केंद्र से निरंतर ज्यादा अमूर्त रूप में मानसिक मॉडल को व्यवस्थित या पुनर्व्यवस्थित करता है, ताकि वह मौजूद अन्य सूचनाओं पर काम करने के लिए उपलब्ध हो सके। इसके लिए क्लार्क और कार्मिलॉफ-स्मिथ (1993) ने प्रतिनिधित्व पुनर्वर्णन (रिप्रेजेनटेशनल रिडिस्कृप्शन) शब्द का प्रयोग किया है। विशेष से आम में सामान्यीकरण करने और समानता के प्रयोग की क्षमता इस पुनर्वर्णन की प्रक्रिया का हिस्सा है। यह वह क्षमता है

जो न केवल रचनात्मक सोच का स्रोत है बल्कि यह विचारधारा और विश्वास की व्यवस्था भी है जो मानव के विकल्पों को रेखांकित करता है।

समाज में मानव के रहने के कारण उसके मानसिक मॉडल में व्याप्त बिखराव को कम करने के लिए एक सामान्य सांस्कृतिक धरोहर माध्यम का काम करती है और यह पीढ़ियों के बीच एकीकृत सोच को स्थापित करने का माध्यम बनता है। पूर्व आधुनिक समाज में सांस्कृतिक ज्ञान ने आंतरिक संचार के लिए एक माध्यम का काम किया। इसने धर्म, आख्यान और फतवा के रूप में समाज के सदस्यों के अनुभवों के अलावा गुणों की सम्मिलित व्याख्या मुहैया करवाया। ऐसे विश्वास के ढांचे हालांकि पूर्वकालीन समाजों तक ही सीमित नहीं है बल्कि आधुनिक समाज का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है।

सामाजिक व आर्थिक ढांचे के भीतर संस्थाओं के माध्यम से व्यवहार के औपचारिक नियमों एवं अनौपचारिक सिद्धांतों दोनों रूपों में विश्वास के ढांचे में तब्दीली आई। मानसिक मॉडल और संस्थाओं के बीच का संबंध अनूठा है। मानसिक मॉडल आंतरिक प्रतिनिधित्व है जिससे कि व्यक्ति की ज्ञानेंद्रियां वातावरण की व्याख्या करती हैं; संस्थाएं बाहरी मॉडल हैं जिसमें व्यक्ति वातावरण को संगठित व व्यवस्थित करता है।

5

इसकी कोई गारंटी नहीं है कि समय के साथ विकसित होने वाले विश्वास और संस्थाएं आर्थिक विकास पैदा करेंगे। अब मुझे उन मुद्दों को रखने दीजिए जो लंबे आर्थिक या राजनीतिक परिर्वतन की एक संक्षिप्त या बुद्धिमत्तापूर्ण कहानी से हासिल हुए है।

विभिन्न भौतिक वातावरणों में उदय होने के साथ जनजातियों ने विभिन्न भाषाओं को विकसित किया और अपने आसपास की दुनिया की व्याख्या के लिए उन्होंने अलग-अलग अनुभवों के साथ विभिन्न मानसिक मॉडल तैयार किया। भाषाओं और मानसिक मॉडलों ने औपचारिक विवशता को आकार दिया, जिसने जनजातियों के संस्थागत ढांचे को परिभाषित किया और रीति-रिवाज, वर्जनाओं और आख्यानों के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता गया और इससे सांस्कृतिक तारतम्यता बनी रही।

श्रम का विभाजन और वर्गीकरण होने के साथ जनजाति राजनीति और अर्थव्यवस्था में महत्व रखने लगी। तंगी की मौलिक आर्थिक समस्या के समाधान में इनके विविध अनुभव और ज्ञान ने सफलता के भिन्न मापों के साथ भिन्न समाजों और सभ्यताओं को पैदा किया। दरअसल, मानव की अंतःनिर्भरता बढ़ने के साथ ही वातावरण की जटिलता

बढ़ गई और व्यापार से होने वाले लाभ को हासिल करने के लिए ज्यादा जटिल संस्थागत ढांचे की जरूरत पड़ी। ऐसे अविष्कार के लिए जरूरी है कि समाज संस्थाओं का विकास करे जो पूरी दुनिया में गुमनाम, अवैयक्तिक विनिमय की अनुमति देगा। एक सीमा तक सांस्कृतिक और स्थानीय अनुभवों ने इन सहयोगों के माध्यम से विविध संस्थाओं और विश्वास व्यवस्था को पैदा किया लेकिन व्यापार से लाभ हासिल करने के लिए जरूरी संस्थाओं को खड़ा करने की संभाव्यता ज्यादा कठिन है। सही मायने में इतिहास के विभिन्न कालों में अधिकतर समाज एक संस्थागत ढांचे में लिपट गए और वे उत्पादक लाभ को हासिल करने के लिए जरूरी अवैयक्तिक विनिमय में विकसित नहीं हुए। उत्पादक लाभ श्रम के बंटवारे और विशेषता से हासिल हुए जिसने राष्ट्र के लिए संपत्ति पैदा की।

इन कहानियों का सार एक प्रकार की सीख है जिसे इंसान समय के साथ समाज से हासिल करता है। इस संदर्भ में इंसान न केवल वर्तमान अनुभवों और ज्ञान को हासिल करता है बल्कि संस्कृति के माध्यम से पूर्व के अनुभवों को समेकित रूप में हासिल करता है। हेयेक द्वारा प्रयोग किए गए शब्द सामूहिक ज्ञान में यह अनुभव शामिल है जिसने समय की धीमी परीक्षा पास की है और हमारी भाषाओं, संस्थाओं, तकनीकी और काम करने के तरीकों में समाहित है। यह ''हमारे समेकित ज्ञान के स्टॉक का समय में परिवर्तन'' है, हेयेक (1960: 27)। यह संस्कृति ही है जो आश्रित तक पहुंचने के रास्ते की चाबी मुहैया कराती है। इस शब्द का प्रयोग वर्तमान और भविष्य पर भूत के प्रभावशाली प्रभाव की व्याख्या करने के लिए किया गया है। किसी भी पीढ़ी का वर्तमान ज्ञान सामूहिक ज्ञान से हासिल बोध के संदर्भ में होता है। तब सीखना समाज की संस्कृति द्वारा परिष्कृत की गई बढ़ोतरी की प्रक्रिया है, जो इंद्रियों द्वारा ग्राह्य भुगतान को तय करता है, लेकिन इसकी कोई गारंटी नहीं है कि एक समाज के समेकित पूर्व के अनुभव नई समस्यों के समाधान में निश्चित रूप से कारगर साबित होंगे। समाज जो विश्वास व्यवस्था और संस्थाओं के प्रति मुग्ध हो जाता है वह सामाजिक जटिलता की नई समस्या के समाधान में विफल होता है।

हमें एक समाज के बारे में समेकित सीख को समझने की आवश्यकता है। सीखने की दो प्रक्रियाएं होती हैं, पहला वह रास्ता जिसमें मौजूदा विश्वास का ढांचा उन सूचनाओं को परिष्कृत करता है जो अनुभवों से हासिल होता है। दूसरा, अलग-अलग अनुभव अलग-अलग समय में समाजों व व्यक्तियों में विरोधाभास पैदा करते हैं। वापसी की कथित दर संभवतः सैन्य तकनीक (मध्यकालीन यूरोप मे), पेशा और धार्मिक फतवे का परिष्कार या

समुद्र की देशांतर को तय करने के लिए एक सटीक समय बताने वाली घड़ी की खोज के लिए बहुत अधिक हो सकता है (इसके लिए अन्वेषण काल के दौरान शानदार पुरस्कार की व्यवस्था थी)।

शुद्ध ज्ञान हासिल करने के लिए प्रोत्साहन जो आधुनिक आर्थिक विकास के लिए जरूरी सहारा है, मौद्रिक पुरस्कार और दंड से प्रभावित है। यह मौलिक रूप से एक रचनात्मक विकास के प्रति समाज की बेरूखी से भी प्रभावित है। इसके लिए गैलिलियो से लेकर डार्विन तक के सृजनात्मक व्यक्तियों की सूची देखी जा सकती है। यद्यपि, समाज की उत्पति और विकास के बारे पर्याप्त सामग्रियां उपलब्ध है, लेकिन इसमें से बहुत कम संस्थागत ढांचे, विश्वास की व्यवस्था और शुद्ध ज्ञान हासिल करने के लिए प्रोत्साहन व गैर प्रोत्साहन के बीच संबंधों पर चर्चा करते हैं। पश्चिमी यूरोप के विकास में एक महत्वपूर्ण कारक शुद्ध विज्ञान के क्षेत्र में शोध की जरूरत की धारणा का लगातार बने रहना था।

जैसा कि समय के मुताबिक संस्थाओं ने आर्थिक प्रदर्शन को तय किया उसी तरह विश्वास की व्यवस्था में प्रोत्साहन ने जगह बनाई और जब हमारी इच्छा आर्थिक प्रदर्शन की व्याख्या करने की होती हो ऐतिहासिक आंकड़ें नहीं मिलते। पूर्व और वर्तमान के अधिकतर समाजों का इतिहास के दौरान आर्थिक प्रदर्शन जो कुछ भी रहा हो पर वे संतोषजनक थे। जैसे-तैसे इंसान ने यह सीख लिया कि आर्थिक प्रदर्शन को कैसे बेहतर बनाया जाएगा लेकिन यह सीख न केवल पहले आर्थिक क्रांति से गायब रही बल्कि यह दुनिया की करीब आधी आबादी से आज भी दूर है। इसके सिवाय आर्थिक प्रर्दशन में हुआ तेज सुधार कुछ देशों का आधुनिक गुण है जो दुनिया के एक छोटे से हिस्से में पिछले कुछ दशकों से सिमट कर रह गया है। हालांकि इसे भौतिक संपन्नता के रूप में परिभाषित किया जाता है। इतिहास के दौरान आर्थिक परिवर्तन की गति और दिशा की व्याख्या से एक बहुत बड़ी उलझन पैदा होती है।

अब हम मानव के व्यवहार की उत्पति, जब इंसान ने अन्य जीवों से अपने आप को अलग किया, तब से उसके अनुभव के बारे में चर्चा करते हैं। यह एक 24 घंटे वाली घड़ी के समान है जिसकी शुरुआत समय से होती है। इंसान के इतिहास में यह समय अफ्रीका में 40 से 50 लाख वर्ष पहले का है। इसके बाद कृषि का विकास और करीब 8000 ईसा पूर्व स्थाई निवास के साथ तथाकथित सभ्यता का विकास होता है। फर्टाइल क्रेसेंट के अनुसार यह घड़ी का अंतिम तीन या चार मिनट है। बाकी के 23 घंटे और 56-57

मिनटों के दौरान इंसान शिकार करता रहा और इकट्ठा करता रहा और जब जनसंख्या बढ़ी तब भी वह धीमी गति से यही सब करता रहा।

अब यदि हम सभ्यता के समय के लिए एक नई 24 घंटे की घड़ी बनाते हैं तो कृषि के विकास से 10,000 वर्ष से लेकर आज तक परिवर्तन की जो गति रही है वह बहुत धीमी है। यह घड़ी के पहले 12 घंटे के समान है। हालांकि हमारा पुरातात्विक ज्ञान बहुत सीमित है। ऐतिहासिक जनसांख्यिकी विशेषज्ञ अनुमान लगाते हैं कि अतीत की तुलना में जनसंख्या की वृद्धि दर संभवतः दोगुना हो गई है लेकिन यह अब भी बहुत धीमी है। पिछले पांच हजार वर्षों के दौरान अर्थव्यवस्थाओं व सभ्यताओं के विकास और खात्मे के साथ परिवर्तन की गति तेज हुई है। जनसंख्या क्राइस्ट के काल के 30 करोड़ से बढ़कर 1750 में करीब 80 करोड़ हो गई जो पूर्व की तुलना में एक महत्वपूर्ण वृद्धि की दर है। पिछला 250 वर्ष, जो 24 घंटे की घड़ी में 35 मिनट के बराबर है, जनसंख्या विस्फोट के साथ आधुनिक आर्थिक विकास का काल रहा है। आज दुनिया की जनसंख्या पांच अरब के आंकड़े को पार कर गई है।

यदि हम अंतिम 250 वर्षों पर ध्यान केंद्रित करें तो हम पाते हैं कि विकास पूरी तरह से पश्चिमी यूरोप तक सीमित रहा और इन 250 वर्षों में से 200 वर्ष इंग्लैंड के लिए था।

विभिन्न कालों में न केवल परिवर्तन की गति बदलती रही बल्कि यह परिवर्तन एक दिशा में नहीं था। यह केवल व्यक्तिगत सभ्यता के खात्मे के परिणामस्वरूप नहीं है बल्कि लगातार सांप्रदायिक गतिरोध का काल रहा है। इसका सबसे ताजा उदाहरण पश्चिम में रोमन सम्राज्य के खात्मे और पश्चिमी यूरोप के पुनरोदय के बीच करीब पांच सौ वर्षों का लंबा अंतराल रहा।

6

आर्थिक अतीत के बारे में हमारी समझ को बेहतर बनाने के लिए एक संस्थागत या ज्ञान-संबंधी सोच क्या सहयोग कर सकती है? सबसे पहले पूर्व के वर्गों में व्याख्या की गई आर्थिक प्रदर्शन की विषम पद्धति से अगल एक समझ बनानी होगी। शर्तों के पैदा होने के बारे में कुछ भी स्वभाविक नहीं है, जो उत्पादक अर्थव्यवस्था के लिए जरूरी अवैयक्तिक बाजार में निम्न लागत पर लेने-देने करने की अनुमति देगा। खेल के सिद्धांत मुद्दों का वर्गीकरण करते हैं। जब खेल दोबारा होता है, जब दूसरे खिलाड़ियों के पूर्व के प्रदर्शन के बारे पूरी सूचनांए दी जाती है और जब खिलाड़ियों की संख्या कम होती है तब

बदले में दूसरों की सहायता में व्यक्ति समान्य तौर पर अपने आप को काफी कीमती पाता है। लाभ को नहीं दोहराने की स्थिति, दूसरों खिलाड़ियों के बारे सूचनाओं में कमी और खिलाड़ियों की संख्या अधिक होने की स्थिति में सहयोग को जारी रखना मुश्किल होता है। ऐसी संस्थाओं को खड़ा करना जो बाद में अवैयक्तिक विनिमय में सहयोग के पक्ष में लाभ या लागत के अनुपात में बदलाव करे, एक जटिल प्रक्रिया है, क्योंकि यह केवल आर्थिक संस्थाओं की उत्पत्ति का नजीता नहीं है बल्कि इसे उचित राजनीति संस्थाओं द्वारा संचालित होने की जरूरत है।

हम केवल इस ऐतिहासिक प्रक्रिया की प्रकृति को उद्घाटित करने की शुरुआत कर रहे हैं। पश्चिमी यूरोप का 10वीं शताब्दी के पिछड़ेपन से 18वीं शताब्दी में दुनिया के आर्थिक केंद्र के रूप में हुआ महत्वपूर्ण विकास आधुनिक आर्थिक विकास को पैदा करने वाली आर्थिक संरचनाओं और राजनीतिक ढांचे को बनाने के लिए बिखरी हुई राजनीतिक या आर्थिक इकाइयों के बीच प्रतियोगिता के संदर्भ में विश्वास व्यवस्था के धीरे-धीरे विकसित होने की कहानी है। यहां तक कि पश्चिमी यूरोप में भी सफलता (नीदरलैंड्स और इंग्लैंड) और असफलता (स्पेन और पुर्तगाल) की कहानियां है जो विविध बाह्य वातावरण के अनुभवों को प्रदर्शित करती हैं।

दूसरा, संस्थागत या ज्ञान-संबंधी विश्लेषण को मार्ग पर निर्भरता की व्याख्या करनी चाहिए, जो इतिहास का एक महत्वपूर्ण नियामक है। क्यों अर्थव्यवस्था जब एक पटरी पर आ जाती है तो वह अग्रसर बनी रहती है? इस मुद्दे पर किया गया महत्वपूर्ण कार्य हमें मार्ग निर्भरता के स्रोत के बारे अंतर्दृष्टि देने की शुरुआत है (आर्थर, 1989 और डेविड, 1985)। लेकिन अभी भी बहुत कुछ है जिसके बारे में हमें जानना है। नव शास्त्रीय (नियो क्लासिकल) सिद्धांत की तार्किक कल्पना यह सुझाव देती है कि गतिहीन अर्थव्यवस्था के राजनीतिक खिलाड़ी बड़ी आसानी से नियमों में बदलाव कर विफल अर्थव्यवस्था की दिशा बदल सकते हैं। ऐसा नहीं है कि शासन खराब प्रदर्शन के बारे में नहीं जानता। बल्कि अर्थव्यवस्था की समस्या को खत्म करने का काम राजनीतिक बाजार और विश्वास व्यवस्था के खिलाड़ियों का है। उदाहरण के लिए स्पेन के 16वीं शताब्दी में हैब्सबर्ग इम्पायर के गौरवशाली समय से 18वीं शताब्दी में फ्रांको के शासनकाल में धाराशायी होने को अंतहीन स्वप्रशंसा और त्वरित ऊटपटांग समाधानों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

तीसरा, यह मार्ग आर्थिक परिवर्तन की समग्र प्रक्रिया में संस्थाओं, तकनीकी और जनांकिकी के बीच जटिल संबंधों की हमारी समझ को मजबूती प्रदान करेगा। आर्थिक प्रदर्शन का एक पूर्ण सिद्धांत आर्थिक इतिहास को एक एकीकृत मार्ग दे सकेगा। हमने

तुरंत सभी चीजों को अभी एकसाथ पेश नहीं किया है। उदाहरण के लिए, रॉबर्ट फॉगेल का जनांकिकी सिद्धांत पर किया गया महत्वपूर्ण काम और पूर्व की अर्थव्यवस्थाओं के पुनर्मूल्यांकन में इसकी ऐतिहासिक जरूरत को अभी भी पूरी तरह से संस्थागत विश्लेषण से जोड़ना है। तकनीकी परिवर्तन के लिए भी यही सच्चाई है। तकनीकी परिवर्तन के वर्तमान निहितार्थ के कारणों और उसके परिणामों को खोजने के लिए नाथन रोसेनबर्ग (1976) और जोइल मोकीर (1990) के महत्वपूर्ण योगदानों को अब भी संस्थागत विश्लेषणों के साथ एकीकृत करने की जरूरत है। वैलिस और नॉर्थ का एक लेख तकनीकी और संस्थागत विश्लेषणों को जोड़ने की शुरुआत है। लेकिन आर्थिक इतिहास के लिए इन्हें शोध के अलग-अलग विषय के रूप में स्थापित करना एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

7

हम सोवियत संघ और विश्व साम्यवाद के उभार और पतन के नियो-क्लासिकल विश्लेषण के लिए जिम्मेदार नहीं हो सकते लेकिन हमारे पास समकालीन विकास की समस्याओं के लिए संस्थागत या ज्ञान-संबंधी मार्ग होना चाहिए। ऐसा करने और आर्थिक परिवर्तन को समझने के लिए एक विश्लेषणात्मक ढांचा मुहैया कराने के लिए हमें निश्चित तौर पर इस मार्ग के निम्नलिखित निहितार्थ पर ध्यान देना होगा।

1. यह औपचारिक नियमों, औपचारिक सिद्धांतों और प्रवर्तन के गुणों का मिश्रण है जो आर्थिक प्रदर्शन को आकार देता है। यद्यपि, नियम रातो-रात बदल सकते हैं लेकिन औपचारिक सिद्धांत धीरे-धीरे ही बदलते हैं। वह सिद्धांत ही होते हैं जो कानून की ''वैधता'' को तय करते हैं, क्रांतिकारी परिवर्तन कभी भी उतना क्रांतिकारी नहीं रहा जितना की उसके समर्थक चाहते थे और पूर्वानुमान से प्रदर्शन अलग होगा। दूसरी अर्थव्यवस्थाओं से औपचारिक नियम ग्रहण करने वाली अर्थव्यवस्थाओं में पहले की तुलना में प्रदर्शन अलग होगा क्योंकि दोनों के औपचारिक नियम और नियमों को लागू करने के तरीके भिन्न होते हैं। इसका मतलब यह है कि सफल पश्चिमी बाजार अर्थव्यवस्थाओं के औपचारिक राजनीतिक व आर्थिक नियमों को तीसरी दुनिया के देशों और पूर्वी यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं में लागू करना बेहतर आर्थिक प्रदर्शन के लिए पर्याप्त नहीं है। खराब आर्थिक प्रदर्शन को ठीक करने का एकमात्र उपाय निजीकरण नहीं है।

2. शासन प्रणाली आर्थिक प्रदर्शन को महत्वपूर्ण रूप से आकार देती है, क्योंकि वह आर्थिक नियमों की व्याख्या और उसे लागू करती है। इसके अलावा विकास के नियमों के एक महत्वपूर्ण हिस्से का निर्माण भी शासन व्यवस्था करती है और सक्षम संपत्ति के

अधिकारों को लागू करती है। यद्यपि, हम इस बारे में बहुत कम जानते हैं कि कैसे ये नीतियां बनाई जाती हैं क्योंकि नई राजनीतिक अर्थव्यवस्था, नया संस्थागत अर्थशास्त्र राजनीति में समाहित है, इसका ध्यान मोटे तौर पर अमेरिका और विकसित देशों पर केंद्रित रहता है। तीसरी दुनिया के देशों और पूर्वी यूरोप की शासन व्यवस्था द्वारा अपनाए गए मॉडल के बारे में एक शोध की जरूरत है। यद्यपि, इन विश्लेषणों का मायने तो जरूर है।

ए). राजनीतिक संस्थाएं केवल तभी स्थायी होंगी जब संगठनों में भी स्थायित्व आए।

बी). सफल सुधार के लिए संस्थाओं और विश्वास व्यवस्था दोनों को निश्चित तौर पर बदलना होगा, क्योंकि यह खिलाड़ियों का मानसिक मॉडल है जो विकल्पों को आकार देगा।

सी). व्यवहार के सिद्धांतों को विकसित करने, जो लंबी प्रक्रिया में नए नियमों को वैधता और सहयोग प्रदान करेगी और इस तरह के तंत्र के आभाव में शासन-व्यवस्था अस्थाई हो जाएगी।

डी). तानाशाही के काल में यद्यपि आर्थिक विकास हो सकता है लेकिन दीर्घकालिक आर्थिक विकास के लिए कानून के शासन की जरूरत है।

ई). विकास के अनुकूल अनौपचारिक मजबूरियां (सिद्धांत, घोषणाएं और आचार संहिता) कभी-कभार अस्थिर राजनीतिक शासन के बावजूद आर्थिक विकास को बढ़ाती है। महत्वपूर्ण यह होता है कि प्रतिकूल नियमों को कितने प्रभावशाली तरीके से लागू किया गया है।

3. दीर्घकालिक विकास के लिए हासिल की गई क्षमता महत्वपूर्ण होती न कि दी गई क्षमता। सफल राजनीति या आर्थिक व्यवस्थाओं ने लचीले संस्थागत ढांचे का विकास किया है जो सफल विकास के घटकों और परिवर्तनों को झेल सकता है। लेकिन ये व्यवस्थाएं लंबे गर्भावस्था की उत्पाद हैं। हम यह नहीं जानते कि कम समय में कैसे अनुकूल क्षमता को पैदा किया जाता है।

हमने समय के साथ आर्थिक प्रदर्शन के बारे में एक समझ हासिल करने के लिए केवल एक रास्ता तैयार किया है। इस पर जारी शोध से नई अवधारणाओं की ऐतिहासिक साक्ष्यों से भिड़ंत होगी जो समय के साथ आर्थिक परिवर्तन के बारे में हमारी समझ को

समृद्ध करने के लिए न केवल एक विश्लेषणात्मक ढांचा मुहैया करवाएगी बल्कि इस प्रक्रिया में यह आर्थिक सिद्धांतों को समृद्धि प्रदान करेगी जिससे कि वह समकालीन आर्थिक मुद्दों का नए तरीके से समाधान ढूंढ सके। यह एक दावा है। नोबेल समिति द्वारा इस दावे को मिली स्वीकृति हमारे लिए इस मार्ग पर चलने की जरूरी शक्ति के रूप में देखी जानी चाहिए।

1. सही मायने में यह एक संभावना-विहीन सिद्धांत है। मैं पाठक को फ्रैंक हान्स की प्रेडिक्शन अबाउट द फ्यूचर ऑफ इकोनॉमिक थ्योरी सुझाऊंगा। (हान, 1991)
2. ये दो खंड नॉर्थ में भौतिक नियंत्रण का संक्षेपण है। (1990क)
3. राजनीतिक बाजारों की संबंधित क्षमताओं में ट्रांजेक्शन कास्ट सिद्धांत के लिए लेखक की किताब 'ए ट्रांजेक्शन कास्ट थ्योरी आफ पोलिटिक्स' देंखे। (1990ख)
4. यद्यपि, यहां भी केहनेमन, त्वेस्की और अन्य के अध्ययन में अनियमितताएं देखें। (होगार्ड एंड रीडर, 1986)।
5. ज्ञान-संबंधी विज्ञान को बेहतर ढंग से समझने के लिए होलैंड इट अल (1986) देखें।
6. विचारधारा व्यक्तियों के समूह द्वारा पेश किए गए मानसिक मॉडलों का एक साझा ढांचा है जो वातावरण की व्याख्या करने के साथ ही यह भी सुझाव देता है वातावरण को कैसा होना चाहिए।
7. रोनाल्ड हेनर (1983) ने एक महत्वपूर्ण लेख में न केवल इंसान की मानसिक क्षमता और बाहरी वातावरण के बीच संबंध स्थापित किया बल्कि आर्थिक प्रक्रिया को रोकने के परिणामों को भी सुझाया।
8. इस विकास को समझने के लिए नॉर्थ एंड थॉमस (1973), जोन्स (1981), रोसेनबर्ग एंड बर्डजेल (1986) को देखें।
9. नीदरलैंड और इंग्लैड को एक तरफ और दूसरी तरफ स्पेन के विरोधाभासी इतिहास को समझने के लिए नॉर्थ (1990क) भाग 3 को देखें।
10. स्पेन के पतन को बदलने के लिए रॉयल कमीशन द्वारा प्रस्तावित बेतुका उपचार को जानने के लिए डी व्रिज (1976) (पेज 28) देखें।
11. फागेल के साथ वाले नोबल व्याख्या को देखें।

संदर्भ:

आर्थर, ब्रियान, (1989) 'कंपीटिंग टेक्नोलाजीज, इंक्रीजिंग रिजर्टंस, एंड लाकिंग बाई हिस्टोकरिक इवेंट्स'', इकोनॉमिक जर्नल 99 (मार्च) 116-131।

क्लार्क, एंडी एंड एन्नेट कार्मिलॉफ-स्मिथ, (फोर्थकमिंग) ‘‘द कागनाइजर्स इन्नर्डसः ए साइकोलॉजिकल एंड फिलॉस्फिकल पर्सपेक्टिव आन द डेवलपमेंट आफ थॉट’’, माइंड एंड लैंगुएज।

केस, रोनाल्ड, (1960) ‘‘प्रॉब्लेम आफ सोशल कास्ट,’’ जर्नल ऑफ लॉ एंड इकोनॉमिक्स 3(1): 1-44।

डेविड, पाल ए., (1985) ‘‘सिलियो एंड इकनामिक्स आफ क्यूडब्ल्यूईआरटीवाई,’’ अमेरीकन इकोनॉमिक रिव्यू 75 (मई) 332-37।

डे व्रिज, जैन, (1976) द इकोनॉमी ऑफ यूरोप इन ऐन एज आफ क्रासेस, 1600-1750, कैम्ब्रिज एंड न्यूयार्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

हैन, फ्रैंक, (1991) ‘‘द नेक्स्ट हंड्रेड ईयर्स’’, द इकोनामिक जर्नल 101 (जनवरी) 47-50।

हयेक, फ्रेडरिक ए., (1960) द कंस्टीट्यूशन ऑफ लिबर्टी, शिकागोः द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।

होगार्ड, रॉबिन ए., एंड मेल्चिन डब्ल्यू. रीडर (इडीएस.), (1986) रेशनल व्वायस, शिकागो एंड लंदनः द यूनिवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस।

हेनर, रोनाल्ड (1983) ‘‘ऑरिजीन आफ प्रिडिक्टेबल बिहेवियर।’’ अमेरीकन इकोनॉमिक रिव्यू।

हालैड, जान एस., कीथ जे. होलयाक, रिचर्ड ई. निस्बेट एंड पाल आर. थागर्ड, (1986) इंडक्शनः प्रोसेस आफ इंफेरेंस, लर्निंग एंड डिसकवरी, कैम्ब्रिजः एम. आई.टी. प्रेस।

जोंस, ई.एल., (1981) द यूरोपीयन मिरैकल, कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

मोकीर, जोल, (1990) द लीवर आफ रीचेज, न्यूयार्क एंड आक्सफोर्डः आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

नेल्सन, रिचर्ड एंड सिडनी जी. विंटर, (1982) ऐन इवोल्युशनरी थ्योरी आफ इकनामिक चेंज, कैम्ब्रिजः हारवर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

नार्थ, डाॅगलास सी., (1990ए) इंस्टीट्यूशंस, इंस्टीट्यूशनल चेंज एंड इकनामिक परफारमेंस, न्यूयार्क: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

नार्थ, डाॅगलास सी., (1990बी) ''ए ट्रांजेक्सन कास्ट थ्योरी आफ पोलिटिक्स'' जर्नल आफ थ्योरेटिकल पोलिटिक्स 2(4)ः 355-67।

नार्थ, डागलास सी., एंड राबर्ट पी. थामस, (1973) द राइज आफ वेस्टर्न वर्ल्डः ए न्यू इकनामिक हिस्ट्री, कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

रोसेनबर्ग, नाथन, (1976) पर्सपेक्टिव आन टेक्नोलाजी, कैम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

रोसेनबर्ग, नाथन, एंड एल. ई. बर्डजेल, (1986) हाउ द वेस्ट ग्रो रिचः द इकनामिक ट्रांसफारमेशन आफ द इंडस्ट्रियल वर्ल्ड, न्यूयार्कः बेसिक बुक्स।

सिमान, हरबर्ट, (1986) ''रेशनलिटी इंन साइकोलाजी एंड इकोनामिक्स,'' इन होगार्ड, राबिन एम. एंड मेलविन एम. रीडर (इड्स)।

टवेस्की, एमास, एंड डैनियल कहनेमन, (1986) ''रेशनल व्वायस एंड द फ्रेमिंग आफ द डिसीजंस'' इन होगार्ड, राबिन एम., एंड मेल्विन एम. रीडर (इड्स), रेशनल व्वाय, शिकागो एंड लंदनः द यूनिवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस।

वैल्लिस, जान जे.,एंड डागलास सी. नार्थ, (1986) ''मेजरिंग द ट्रांजेक्सन सेक्टर इन अमेरीकन इकनामी'', इन एस. एल. इंगरमैन एंड आर. ई. गैलमैन, (इड्स), लांग टर्म फैक्टर्स इन अमेरीकन इकनामी ग्रोथ, शिकागोः यूनिवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस।

वैलिस, जान जे., एंड डागलास सी. नार्थ (फोर्थकमिंग) ''इस्टीट्यूशनल चेंज इन अमेरीकन इकोनामिक ग्रोथः ए ट्रांजेक्शंस कास्ट्स अप्रोच'', जर्नल आफ इंस्टीट्यूशनल एंड थ्योरेटिकल इकोनाॅमिक्स।

मैं पूर्व के लेख पर प्रतिक्रया के लिए रॉबर्ट बेट्स, ली एंड एलेक्जेंडर बेनहम, अवनेर ग्रीफ, मार्गरेट लेवी, रैंडी निल्सेन, जान नाई, जीन लारेंट रोसेनथल, नारमैन शोफिल्ड और बैरी वेंगैस्ट और इस लेख के संपादन के लिए एलिसाबेथ केस का आभारी हूं।

नोबल लिट्रेचर्स, इकनामिक्स 1991-1995, संपादक आर्सटेन पर्सन, वर्ल्ड साइंटिफिक पब्लिसिंग कंपनी, सिंगापुर, 1997 से लिया गया।